अध्यक्ष महोदय (सदस्य तापीय) श्री टी.के. बरई जी का संबोधन- (28.09.2016 को हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर)

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी के.वि.प्रा. कार्यालय में दिनांक 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। आज हम राजभाषा के गरिमामयी पावन उत्सव का 'समापन समारोह' मना रहें हैं. हमारा राजभाषा पखवाड़ा मानना तब अधिक सार्थक होगा जब हम यहाँ से यह सन्देश लेकर जाएं कि अब हम एक नई शुरुआत कर रहे हैं. यह शुरुआत एक "मिशन" के रूप में होंनी चाहिए. हमरा लक्ष्य महान है और एक मिशन के रूप में ही हम इसे प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा मेरा विश्वास है. मुझे पूरा भरोसा है की आप सभी राजभाषा में कार्य करने में भली भांति सक्षम हैं और मेरे इस भरोसे को कायम रखेंगे.

इस अवसर पर यह उचित होगा कि हम आत्मनिरीक्षण करें और इस तथ्य की खोज करें कि हम से चूक कहाँ हुई है. इसलिए यह संकल्प मन से लेना आवश्यक है कि आज के बाद से हम अपना कार्य अधिक से अधिक राजभाषा में करें और हिंदी को इसका सच्चा स्थान प्रदान करने में दिल से सहयोग दें. यह केवल भावना का विषय नहीं है, बल्कि हमारा वास्तविक कर्तव्य भी है. इस दिशा में प्रयास तो जारी हैं पर अभी बहुत परिश्रम की जरूरत है. दो चार कदम उठाने भर से काम नहीं चलेगा.

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन जी का कथन कि '**हिंदी देश की एकता की कड़ी है'** इस रूप में हिंदी सिर्फ सरकारी कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों, बैंकों एवं एयरपोर्टों पर देखने को मिलती है. हिन्दी केवल दिखावे की वस्तु न होकर पूरे मनोयोग से अपनाने, प्रसार करने व प्रयोग करने की भाषा है. इसके लिए स्वप्रयासों के साथ-साथ शासन स्तर पर भी पूर्ण सहयोग की महती जरूरत है.

राजकीय कार्यों में दो तरह के पक्ष सामने आते हैं- गैर तकनीकी और तकनीकी पक्ष। गैर तकनीकी कार्यों में शासकीय कामकाज, पत्राचार और जानकारियों/सूचनाओं के आदान-प्रदान इत्यादि में प्रयुक्त होने वाली हिंदी आती है। इसमें विभागीय शब्दावलियों की आम हिंदी भाषा प्रयोग की जाती है, जिसके मार्ग में संभवत: अधिक बाधाएं नहीं हैं और इस पक्ष में तो निश्चित तौर पर शत-प्रतिशत उपयोग होना ही चाहिए। कठिनाई आती है तकनीकी विषयों पर हिंदी भाषा के प्रयोग में। इन विषयों में हिंदी के धारा प्रवाह प्रयोग में शुरू में कुछ कठिनाईयां आ सकती हैं, लेकिन लगन व अभ्यास से इस बाधा को दूर किया जा सकता है ।

हिंदी प्रयोग की कठिनाई व अड़चनों से निपटने के लिए हमें प्रगति और विकास का पर्याय बन चुकी '**सूचना प्रौद्योगिकी'** का भी सहारा लेना चाहिए। टंकण, शब्द संसाधन, शब्दावलियां तथा अन्य तकनीकी टूल्स आज उपलब्ध हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नए अनुसंधान हो रहे हैं और वांछित लाभ भी प्राप्त किए जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के

विभिन्न साधन-उपकरण अपरिमित क्षमता से संपन्न हैं। अत: आज जरूरत है कि हम अपने ज्ञान को अद्यतन करें और अपनी इच्छाशक्ति से इस दिशा में कुछ नए कदम रखते हुए मंजिल की ओर अग्रसर हों और इस पूर्वाग्रह से बाहर निकलें कि कंप्यूटर की भाषा मात्र अंग्रेजी है।

अत: जिम्मेदार पदों पर आसीन हम अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच इस विचारधारा को उत्पन्न व उन्नत करना होगा कि जिस प्रकार रक्षा के विषय एवं हमारी भौगोलिक सीमाएं एक राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न बन जाती हैं, उसी प्रकार हमें मिलजुल कर राजभाषा का संरक्षण करना होगा। सभी को इस ओर सम्मिलित प्रयास करने होंगे, आवश्यक समय देना होगा तथा मनन करना होगा की किस प्रकार हिंदी की उन्नति में हम सहयोगी हो सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि हम स्वयं को हमेशा एक 'ट्रेनी' के रूप में देखें और हर दिन हिंदी में कुछ नया सीखने की लालसा रखें। अधिक से अधिक हिंदी की पुस्तकें पढ़ें और सरल से सरल भाषा का प्रयोग करें। पुस्तकालय को सुझाव दें ताकि उच्च स्तर की हिंदी की पुस्तकें पुस्तकालय में उपलब्ध हों तथा पाठकों की रूचि पठन-पाठन की ओर बढे.

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपेक्षा करता हूं कि आप राजभाषा में कार्य करने के महत्व को समझेंगे और इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। अपने भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषिक एकसूत्रता का संकल्प लेना जितना महत्वपूर्ण है उतना ही कठिन भी। यह संकल्प निश्चय ही चुनौतियों से भरा है, परंतु हमें अपनी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए इस चुनौती को स्वीकार करना ही होगा।

पूर्ण विश्वास के साथ

जय हिन्द !